5 सहर्ष स्वीकारा है

—गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

कवि परिचय

जीवन परिचय—प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि गजानन माधव 'मुक्तिबोध' का जन्म मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के श्योपुर नामक स्थान पर 1917 ई० में हुआ था। इनके पिता पुलिस विभाग में थे। अत: निरंतर होने वाले स्थानांतरण के कारण इनकी पढ़ाई नियमित व व्यवस्थित रूप से नहीं हो पाई। 1954 ई. में इन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से एम०ए० (हिंदी) करने के बाद राजनाद गाँव के डिग्री कॉलेज में अध्यापन कार्य आरंभ किया। इन्होंने अध्यापन, लेखन एवं पत्रकारिता सभी क्षेत्रों में अपनी योग्यता, प्रतिभा एवं कार्यक्षमता का परिचय दिया। मुक्तिबोध को जीवनपर्यंत संघर्ष करना पड़ा और संघर्षशीलता ने इन्हें चिंतनशील एवं जीवन को नए दृष्टिकोण से देखने को प्रेरित किया। 1964 ई० में यह महान चिंतक, दार्शनिक, पत्रकार एवं सजग लेखक तथा कवि इस संसार से चल बसा।

रचनाएँ—गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

(*i*) **कविता-संग्रह**–चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक-धूल।

(*ii*) **कथा-साहित्य**–काठ का सपना, विपात्र, सतह से उठता आदमी।

(*iii*) **आलोचना**–कामायनी–एक पुनर्विचार, नई कविता का आत्मसंघर्ष, नए साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, समीक्षा की समस्याएँ, एक साहित्यिक की डायरी।

(*iv*) भारत–इतिहास और संस्कृति।

काव्यगत विशेषताएँ—मुक्तिबोध प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रमुख सूत्रधारों में थे। इनकी प्रतिभा का परिचय अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' से मिलता है। उनकी कविता में निहित मराठी संरचना से प्रभावित लंबे वाक्यों ने आम पाठक के लिए कठिन बनाया, लेकिन उनमें भावनात्मक और विचारात्मक ऊर्जा अटूट थी, जैसे कोई नैसर्गिक अंत:स्रोत हो जो कभी चुकता ही नहीं, बल्कि लगातार अधिकाधिक वेग और तीव्रता के साथ उमड़ता चला आता है। यह ऊर्जा अनेकानेक कल्पना-चित्रों और फैंटेसियों का आकार ग्रहण कर लेती है। इनकी रचनात्मक ऊर्जा का एक बहुत बड़ा अंश आलोचनात्मक लेखन और साहित्य-संबंधी चिंतन में सक्रिय रहे। ये पत्रकार भी थे। इन्होंने राजनीतिक विषयों, अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य तथा देश की आर्थिक समस्याओं पर लगातार लिखा है। कवि शमशेर बहादुर सिंह ने इनकी कविता के बारे में लिखा है–

"....अद्भुत संकेतों से भरी, जिज्ञासाओं से अस्थिर, कभी दूर से शोर मचाती, कभी कानों में चुपचाप राज़ की बातें कहती चलती है, हमारी बातें हमको सुनाती है। हम अपने को एकदम चकित होकर देखते हैं और पहले से अधिक पहचानने लगते हैं।"

भाषा-शैली—इनकी भाषा उत्कृष्ट है। भावों के अनुरूप शब्द गढ़ना और उसका परिष्कार करके उसे भाषा में प्रयुक्त करना भाषा-सौंदर्य की अद्भुत विशेषता है। इन्होंने तत्सम शब्दों के साथ-साथ उर्दू, अरबी और फ़ारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया है।

कविता का प्रतिपाद्य एवं सार

प्रतिपाद्य—मुक्तिबोध की कविताएँ आमतौर पर लंबी होती हैं। इन्होंने जो भी छोटी कविताएँ लिखी हैं उनमें एक है **'सहर्ष स्वीकारा है'** जो **'भूरी-भूरी खाक-धूल'** काव्य-संग्रह से ली गई है। एक होता है–'स्वीकारना' और दूसरा होता है–'सहर्ष स्वीकारना' यानी खुशी-खुशी स्वीकार करना। यह कविता जीवन के सब सुख-दुख, संघर्ष-अवसाद, उठा-पटक को सम्यक भाव से अंगीकार करने की प्रेरणा देती है। कवि को जहाँ से यह प्रेरणा मिली, कविता प्रेरणा के उस उत्स तक भी हमको ले जाती है।

उस विशिष्ट व्यक्ति या सत्ता के इसी 'सहजता' के चलते उसको स्वीकार किया था–कुछ इस तरह स्वीकार किया था कि आज तक सामने नहीं भी है तो भी आस-पास उसके होने का एहसास है–

मुस्काता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है!

सार—कवि कहता है कि मेरे जीवन में जो कुछ भी है, वह मुझे सहर्ष स्वीकार है। मुझे जो कुछ भी मिला है, वह तुम्हारा दिया हुआ है तथा तुम्हें प्यारा है। मेरी गर्वीली गरीबी, विचार-वैभव, गंभीर अनुभव, दृढ़ता, भावनाएँ आदि सब पर तुम्हारा प्रभाव है। तुम्हारे साथ मेरा न जाने कौन-सा नाता है कि मैं जितनी भी भावनाएँ बाहर निकालने का प्रयास करता हूँ, वे भावनाएँ उतनी ही अधिक उमड़ती रहती हैं। तुम्हारा चेहरा मेरी ऊपरी धरती पर चाँद के समान अपनी कांति बिखेरता रहता है।

कवि कहता है कि "मैं तुम्हारे प्रभाव से दूर जाना चाहता हूँ क्योंकि मैं भीतर से दुर्बल पड़ने लगा हूँ। तुम्हीं मुझे दंड दो ताकि मैं दक्षिण ध्रुव की अंधकारमयी अमावस्या की रात्रि के अँधेरों में लुप्त हो जाऊँ। मैं तुम्हारे उजालेपन को अधिक सहन नहीं कर पा रहा हूँ। तुम्हारी ममता की कोमलता भीतर से चुभने-सी लगी है। मेरी आत्मा कमजोर पड़ने लगी है।" वह स्वयं को पाताली अँधेरों की गुफाओं में खोया होने की बात कहता है, किंतु वहाँ भी उसे प्रियतम का सहारा है।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सप्रसंग व्याख्या कीजिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. *ज़िंदगी में जो कुछ है, जो भी है*
सहर्ष स्वीकारा है;
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।
गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब
यह विचार-वैभव सब
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनव सब
मौलिक है, मौलिक है
इसलिए कि पल-पल में
जो कुछ भी जाग्रत है अपलक है–
संवेदन तुम्हारा है!! (पृष्ठ-30)

[CBSE (Delhi), 2009 (C), Sample Paper 2013, (Delhi) 2015]

शब्दार्थ—***सहर्ष***—खुशी के साथ। ***स्वीकारा***—मन से माना। ***गरबीली***—स्वाभिमानिनी। ***गंभीर***—गहरा। ***अनुभव***—व्यावहारिक ज्ञान। ***विचार-वैभव***—भरे-पूरे विचार। ***दृढ़ता***—मजबूती। ***सरिता***—नदी। ***भीतर की सरिता***—भावनाओं की नदी। ***अभिनव***—नया। ***मौलिक***—वास्तविक। ***जाग्रत***—जागा हुआ। ***अपलक***—निरंतर। ***संवेदन***—अनुभूति।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **'आरोह, भाग-2'** में संकलित कविता **'सहर्ष स्वीकारा है'** से उद्धृत है। इसके रचयिता **गजानन माधव 'मुक्तियोध'** हैं। इस कविता में कवि ने जीवन में दुख-सुख, संघर्ष-अवसाद, उठा-पटक को सम्यक भाव से अंगीकार करने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या—कवि कहता है कि मेरी ज़िंदगी में जो कुछ है, जैसा भी है, उसे मैं खुशी से स्वीकार करता हूँ। इसलिए मेरा जो कुछ भी है, वह उसको (माँ या प्रिया) अच्छा लगता है। मेरी स्वाभिमानयुक्त गरीबी, जीवन के गंभीर अनुभव, विचारों का वैभव, व्यक्तित्व की दृढ़ता, मन में बहती भावनाओं की नदी–ये सब मौलिक हैं तथा नए हैं। इनकी मौलिकता का कारण यह है कि मेरे जीवन में हर क्षण जो कुछ घटता है, जो कुछ जाग्रत है, उपलब्धि है, वह सब कुछ तुम्हारी प्रेरणा से हुआ है।

विशेष—(*i*) कवि अपनी हर उपलब्धि का श्रेय उसको (माँ या प्रिया) देता है।
(*ii*) संबोधन शैली है।
(*iii*) 'मौलिक है' की आवृत्ति प्रभावी बन पड़ी है।
(*iv*) 'विचार-वैभव' और 'भीतर की सरिता' में रूपक अलंकार तथा 'पल-पल' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
(*v*) 'सहर्ष स्वीकारा', 'गरबीली गरीबी', 'विचार-वैभव' में अनुप्रास अलंकार की छटा है।
(*vi*) खड़ी बोली है।
(*vii*) काव्य की रचना मुक्तक छंद में है, जिसमें 'गरबीली', 'गंभीर' आदि विशेषणों का सुंदर प्रयोग है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न **(क)** *कवि जीवन की प्रत्येक परिस्थिति को सहर्ष स्वीकार क्यों करता है?*
(ख) *कवि किन्हें नवीन और मौलिक मानता है तथा क्यों?*
(ग) *'जो कुछ भी मेरा है वह तुम्हें प्यारा है'–इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।*

उत्तर (क) कवि को अपने जीवन की हर उपलब्धि व स्थिति इसलिए सहर्ष स्वीकार है क्योंकि यह सब कुछ उसकी माँ या प्रेयसी को प्रिय लगता है; क्योंकि उसे कवि की हर उपलब्धि पसंद है।

(ख) कवि स्वाभिमानयुक्त गरीबी, जीवन के गंभीर अनुभव, वैचारिक चिंतन, व्यक्तित्व की दृढ़ता और अंतःकरण की भावनाओं को मौलिक मानता है। इसका कारण यह है कि ये सब उसके यथार्थ के प्रतिफल हैं और इन पर किसी का प्रभाव नहीं है।

(ग) 'जो कुछ भी मेरा है वह तुम्हें प्यारा है'–कथन का आशय यह है कि कवि के पास जो कुछ उपलब्धियाँ हैं वह उसे (अभीष्ट महिला) को प्रिय हैं। इन उपलब्धियों में वह अपनी प्रियतता (माँ या प्रिया) का समर्थन महसूस करता है।

2. *जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है*
जितना भी उँड़ेलता हूँ, भर-भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है! (पृष्ठ-30)

[*CBSE (Outside), 2011 (C) 2012*]

शब्दार्थ—***रिश्ता***—रक्त संबंध। ***नाता***—संबंध। ***उँड़ेलना***—बाहर निकालना। ***सोता***—झरना।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित कविता '**सहर्ष स्वीकारा है**' से उद्धृत है। इसके रचयिता **गजानन माधव 'मुक्तिबोध'** हैं। इस कविता में कवि ने जीवन में दुख-सुख, संघर्ष-अवसाद, उठा-पटक सम्यक भाव से अंगीकार करने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या—कवि कहता है कि तुम्हारे साथ न जाने कौन-सा संबंध है या न जाने कैसा नाता है कि मैं अपने भीतर समाये हुए तुम्हारे स्नेह रूपी जल को जितना बाहर निकालता हूँ, वह फिर-फिर चारों ओर से सिमटकर चला आता है और मेरे हृदय में भर जाता है। ऐसा लगता है मानो दिल में कोई झरना बह रहा है। वह स्नेह मीठे पानी के स्रोत के समान है जो मेरे अंतर्मन को तृप्त करता रहता है। इधर मन में प्रेम है और उधर तुम्हारा चाँद जैसा मुस्कराता हुआ चेहरा अपने अद्भुत सौंदर्य के प्रकाश से मुझे नहलाता रहता है। कवि का आंतरिक व बाह्य जगत-दोनों उसी स्नेह से युक्त स्वरूप से संचालित होते हैं।

विशेष—(*i*) कवि अपने प्रिय के स्नेह से पूर्णत: आच्छादित है।

(*ii*) 'दिल में क्या झरना है' में प्रश्न अलंकार है।

(*iii*) 'भर-भर' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है, 'जितना भी उँड़ेलता हूँ, भर-भर फिर आता है' में विरोधाभास अलंकार है, 'मीठे पानी का सोता है' में रूपक अलंकार है, प्रिय के मुख की चाँद के साथ समानता के कारण उपमा अलंकार है।

(*iv*) मुक्तक छंद है।

(*v*) खड़ी बोली युक्त भाषा में लाक्षणिकता है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर-

प्रश्न (क) *कवि अपने दिल की तुलना किससे करता है तथा क्यों?*

(ख) *कवि प्रिय को अपने जीवन में किस प्रकार अनुभव करता है?*

(ग) *कवि ने प्रिय की तुलना किससे की है और क्यों?*

उत्तर (क) कवि अपने दिल की तुलना मीठे पानी के झरने से करता है। वह इसमें से जितना भी प्रेम बाहर उँड़ेलता है, उतना ही यह फिर भर जाता है।

(ख) कवि प्रिय को अपने जीवन पर इस प्रकार आच्छादित अनुभव करता है जैसे धरती पर सदा चाँद मुस्कराता रहता है। कवि के जीवन पर सदा उसके प्रिय का मुस्कराता हुआ चेहरा जगमगाता रहता है।

(ग) कवि ने अपने प्रिय की तुलना चाँद से इसलिए की है क्योंकि जिस प्रकार आकाश में हँसता चाँद अपने प्रकाश से धरती को नहलाता रहता है उसी प्रकार कवि को अपने प्रिय का मुस्कराता चेहरा अपने अद्भुत सौंदर्य से नहलाता रहता है।

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. *गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब*
यह विचार-वैभव सब
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनव सब
मौलिक है, मौलिक है।

प्रश्न **(क)** *'गरीबी' के लिए 'गरबीली' विशेषण के प्रयोग से कवि का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।*

(ख) *'भीतर की सरिता' क्या है? 'मौलिक है, मौलिक है' के दोहराव से कथन में क्या विशेषता आ गई है?*

(ग) *काव्यांश की भाषा पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।*

उत्तर (क) कवि ने 'गरीबी' के लिए 'गरबीली' विशेषण का प्रयोग किया है। 'गरबीली' से तात्पर्य 'स्वाभिमान' से है। वह गरीबी को महिमामंडित करना चाहता है। उसे अपनी गरीबी भी प्रिय है।

(ख) 'भीतर की सरिता' का अर्थ है–कवि के हृदय की असंख्य कोमल भावनाएँ। कवि के मन में प्रिया के प्रति अनेक भावनाएँ उमड़ती रहती हैं 'मौलिक है, मौलिक है' के दोहराव से कवि अनुभूतियों की गहनता व्यक्त करता है।

कवि चाँद की तरह आत्मा पर झुका चेहरा भूलकर अंधकार अमावस्या में नहाने की बात इसलिए करता है क्योंकि कवि प्रियतमा के प्रकाश से निकलना चाहता है। वह यथार्थ में रहना चाहता है। जीवन में सदैव सब कुछ अच्छा नहीं रहता। वह अपने भरोसे जीना चाहता है। कवि प्रियतमा के स्नेह से स्वयं को मुक्त करके आत्मनिर्भर बनना चाहता है तथा स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास करने की इच्छा रखता है।

4. *तुम्हें भूल जाने की*
दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या
शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं
झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं
इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित
रहने का रमणीय यह उजेला अब
सहा नहीं जाता है।

(क) *यहाँ अंधकार-अमावस्या के लिए क्या विशेषण इस्तेमाल किया गया है और उससे विशेष्य में क्या अर्थ जुड़ता है।*

(ख) *कवि ने व्यक्तिगत संदर्भ में किस स्थिति को अमावस्या कहा है?*

(ग) *इस स्थिति से ठीक विपरीत ठहरने वाली कौन-सी स्थिति कविता में व्यक्त हुई है? इस वैपरीत्य को व्यक्त करने वाले शब्द का व्याख्यापूर्वक उल्लेख करें।*

(घ) *कवि अपने संबोध्य (जिसको कविता संबोधित है कविता का 'तुम') को पूरी तरह भूल जाना चाहता है। इस बात को प्रभावी तरीके से व्यक्त करने के लिए कवि ने क्या युक्ति अपनाई है? रेखांकित अंशों को ध्यान में रखकर उत्तर दें।*

उत्तर (क) यहाँ 'अंधकार-अमावस्या' के लिए 'दक्षिण ध्रुवी' विशेषण का इस्तेमाल किया गया है। इसके प्रयोग से अंधकार का घनत्व और अधिक बढ़ जाता है।

(ख) कवि व्यक्तिगत संदर्भ में अंधकार को अपने शरीर व हृदय में बसा लेना चाहता है ताकि वह प्रियतमा के स्नेह से स्वयं को दूर कर सके। वह एकाकी जीवन जीना चाहता है। इसे ही उसने अमावस्या कहा है।

(ग) इस स्थिति से ठीक विपरीत ठहरने वाली स्थिति निम्नलिखित है–
'तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित रहने का रमणीय यह उजेला' कवि ने प्रियतमा की आभा से सदैव घिरे रहने की स्थिति को उजाले के रूप में व्यक्त किया है। उजाला मनुष्य को मार्ग दिखाता है। इसी तरह प्रिया का स्नेह रूपी उजाला उसे जीवन-पथ पर चलने के लिए प्रोत्साहित करता है।

(घ) कवि अपने संबोध्य को पूरी तरह भूल जाना चाहता है। अपनी बात को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए वह प्रियतमा को भूल जाने, उसके प्रभाव को शरीर और हृदय में उतार लेने, झेलने और नहा लेने की युक्ति अपनाता है। वह अंधकार में इस प्रकार लीन होना चाहता है कि प्रियतमा की स्मृति रूपी प्रकाश की किरण उसे छू न सके।

5. *'बहलाती-सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है' और कविता के शीर्षक 'सहर्ष स्वीकारा है' में आप कैसे अंतर्विरोध पाते हैं। चर्चा कीजिए।*

उत्तर इन दोनों में अंतर्विरोध है। कविता के प्रारंभ में कवि जीवन के हर सुख-दुख को सहर्ष स्वीकार करता है, क्योंकि यह सब उसकी प्रियतमा को प्यारा है। हर घटना, हर परिणाम को प्रिया की देन मानता है। दूसरी तरफ वह प्रिया की आत्मीयता को बरदाश्त नहीं कर पा रहा। एक की स्वीकृति तथा दूसरे की अस्वीकृति–दोनों में अंतर्विरोध है। कवि का आशय यह है कि अभी तक तो उसने सब कुछ सहर्ष स्वीकार कर लिया है, परंतु अब उसकी सहन-शक्ति समाप्त हो रही है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. *कवि के जीवन में ऐसा क्या-क्या है जिसे उसने सहर्ष स्वीकारा है?* [*CBSE (Delhi), 2009*]

उत्तर कवि ने जीवन के सुख-दुख को अनुभूतियों को सहर्ष स्वीकारा है। उसके पास गर्वीली गरीबी है, जीवन के गहरे अनुभव हैं, विचारों का वैभव, भावनाओं की बहती सरिता है, व्यक्तित्व की दृढ़ता है तथा प्रिय का प्रेम है। ये सब उसकी प्रियतमा को पसंद हैं, इसलिए उसे ये सब सहर्ष स्वीकार हैं।

2. *मुक्तिबोध की कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कवि ने किसे सहर्ष स्वीकारा था? आगे चलकर वह उसी को क्यों भूलना चाहता था?* [*CBSE (Outside), 2009*]

उत्तर कवि ने अपने जीवन में सुखद-दुखद, कटु, मधुर, व्यक्तित्व की दृढ़ता व मीठे-तीखे अनुभव आदि को सहर्ष स्वीकारा है क्योंकि वह इन सबको अपनी प्रियतमा के साथ जुड़ा पाता है। कवि का जीवन प्रियतमा के स्नेह से आच्छादित है। वह अतिशय भावुकता व संवेदनशीलता से तंग आ चुका है। इससे छुटकारा पाने के लिए वह विस्मृति के अंधकार में खो जाना चाहता है।

3. *'सहर्ष स्वीकारा है' के कवि ने जिस चाँदनी को सहर्ष स्वीकारा था, उससे मुक्ति पाने के लिए वह अंग-अंग में अमावस की चाह क्यों कर रहा है?* [*CBSE (Foreign), 2009*]

उत्तर कवि अपनी प्रियतमा के अतिशय स्नेह, भावुकता के कारण परेशान हो गया। अब वह अकेले जीना चाहता है ताकि मुसीबत आने पर उसका सामना कर सके। वह आत्मनिर्भर बनना चाहता है। यह तभी हो सकता है, जब वह प्रियतमा के स्नेह से मुक्ति पा सके। अत: वह अपने अंग-अंग में अमावस की चाह कर रहा है ताकि प्रिया के स्नेह को भूल सके।

4. *'सहर्ष स्वीकारा है' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।*

उत्तर **'सहर्ष स्वीकारा है'** कविता गजानन माधव 'मुक्तिबोध' के काव्य-संग्रह **'भूरी-भूरी खाक-धूल'** में ली गई है। इसमें कवि ने अपने जीवन के समस्त अनुभवों, सुख-दुख, संघर्ष-अवसाद, उठा-पटक आदि स्थितियों को सहर्ष स्वीकारने की बात कहता है, क्योंकि इन सभी के साथ वह अपनी प्रियतमा का जुड़ाव अनुभव करता है। उसका जो कुछ है वह सब उसकी प्रियतमा को अच्छा लगता है। कवि अपनी स्वाभिमानयुक्त गरीबी, जीवन के गंभीर अनुभव, व्यक्तित्व की दृढ़ता, मन में उठती भावनाएँ, जीवन में मिली उपलब्धियाँ सभी के लिए अपनी प्रियतमा को प्रेरक मानता है। कवि को लगता है कि वह अपनी प्रियतमा के प्रेम के प्रभावस्वरूप कमजोर पड़ता जा रहा है। उसे अपना भविष्य अंधकारमय लगता है। वह अंधकारमय गुफा में एकाकी जीवन जीना चाहता है, इसके लिए वह अपनी प्रियतमा को पूरी तरह से भूल जाना चाहता है।

स्वयं करें

1. कवि के पास जो कुछ भी है वह सब विशिष्ट और मौलिक क्यों है? 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।
2. कवि को लगता है कि शायद उसके दिल में झरना है जिसमें मीठे जल का स्रोत है। ऐसा क्यों?

3. 'भीतर वह, ऊपर तुम' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?
4. कवि कौन-सा दंड पाना चाहता है और क्यों ?
5. 'सुखद-मधुर स्थिति' आम आदमी को अच्छी लगती है पर कवि के लिए यही स्थिति असह्य बन गई है, ऐसा क्यों ?
6. कवि कहाँ लापता होना चाहता है और क्यों ? वहाँ भी उसके साथ कौन होगा ?
7. कवि अतीत, वर्तमान और भविष्य की सभी उपलब्धियों को किस भाव से स्वीकारता है तथा इसके क्या कारण हो सकते हैं ?
8. निम्नलिखित काव्यांशों के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(अ) ज़िंदगी में जो कुछ है, जो भी है
सहर्ष स्वीकारा है;
इसलिए कि जो कुछ मेरा है
वह सब तुम्हें प्यारा है।
गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब।

(क) *भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।*
(ख) *भाषागत दो विशेषताएँ लिखिए।*
(ग) *'गरबीली गरीबी' का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।*

(ब) सचमुच मुझे दंड दो कि हो जाऊँ
पाताली अँधेरे की गुहाओं में विवरों में
धुएँ के बादलों में
बिलकुल मैं लापता।

(क) *काव्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए।*
(ख) *भाषिक-शिल्प की विशेषताएँ लिखिए।*
(ग) *'पाताली अँधेरे की गुहाओं में विवरों में' के प्रयोग से काव्य-सौंदर्य में क्या विशिष्टता आ गई है ?*